International Journal of Applied Research 2018; 4(12): 391-394

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(12): 391-394
www.allresearchjournal.com
Received: 08-10-2018
Accepted: 11-11-2018

डॉ. दुर्गेश कुमार सिंह
प्राचार्य, एक समाजवैज्ञानिक अध्ययन स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. दुर्गेश कुमार सिंह
प्राचार्य, एक समाजवैज्ञानिक अध्ययन स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,उत्तर प्रदेश, भारत

छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. दुर्गेश कुमार सिंह

शोध सारांश
मानव की उत्पत्ति और उसके विकास का प्राथमिक आधार स्वास्थ्य है। स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। स्वस्थ समाज अपने विकास के लिए परिवेशात्मक दशाओं से निरंतर अंतक्रिया करता रहता है। स्वास्थ्य एवं आरोग्यता प्रत्येक व्यक्ति के अलग–अलग स्वास्थ्य सम्बन्धी शारीरिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। व्यक्तियों के स्वास्थ्य निर्धारण की प्रक्रिया उनकी प्रजाति द्वारा न होकर उनके जीवन की दशाओं द्वारा होती है। व्यक्तिगत स्वच्छता का प्रभाव व्यक्ति के ऊपर पड़ता है। व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक स्थितियां उनके स्वस्थ शरीर से अंर्तसंबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के आदिवासी जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पर आधारित है, जिसमें इस जनजाति के दैनिक जीवन तथा उनके रहन–सहन भौगोलिक परिवेश और स्वास्थ्य समस्याओं का मूल्यांकन कर ज्ञात आकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस आदिवासी जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में कमी अशिक्षा, अज्ञानता एवं निर्धनता का प्रतिफल है।

कुट शब्द: आदिम जनजाति, स्वास्थ्य जागरूकता, स्वच्छता, परिवेश, शारीरिक, सामाजिक

प्रस्तावना
मानव जीवन की आवश्यक दशाएं उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगौलिक परिवेश पर निर्भर करती है। व्यक्ति के स्वास्थ की सर्वागीण क्षमता उसके शारीरिक अवयवों की स्वास्थ्यता पर आधारित है। स्वच्छता अथवा जीवनयापन की मूलभूत विशिष्टतायें व्यक्ति के स्वास्थ्य को संचालित करती है। वह जिस परिवेश में निवास करता है। उसकी वायु, जल, प्रकाश एवं अन्य प्रतिजनित कारक स्वास्थ्य की दशाओं का निर्धारण करते हैं। व्यक्तियों के स्वास्थ्य निर्धारण की प्रक्रिया उनको प्रजाति द्वारा न होकर उनके जीवन की दशाओं द्वारा होती है। वस्तुतः प्रति से संघर्ष एवं समायोजन करते हुए व्यक्ति अपना विकास करता है। सामाजिक पर्यावरण के साथ–साथ भौतिक पर्यावरण का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहारों मनोदशाओं तथा स्वास्थ्य पर पड़ता है। विकास के साथ–साथ मानव समुदाय अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपने परिवेश के अनुकूलन अभियोजित कर लेता है।
सामान्यतः सभी जानते हैं, कि स्वास्थ्य क्या है? परन्तु इसकी एक सुनिश्चित या सुस्पष्ट परिभाषा देना कठिन है। वास्तव में स्वास्थ्य, शरीर में कोई रोग (Disease) न होने से भी आगे दशा है। "स्वास्थ्य" को रोग के सन्दर्भ के बिना परिभाषित करना भी कठिन है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने संविधान में स्वास्थ्य को कुछ इस तरह परिभाषित किया है–"स्वास्थ्य वह दशा है जिसमें सम्पूर्ण शारीरिक, सामाजिक और मानसिक सन्तुष्टि हो, शरीर में सिर्फ किसी रोग का न होना पूर्ण स्वास्थ्य नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य की परिभाषा में किसी रोग की गैर मौजूदगी से भी आगे जोर दिया है। उसमें स्वास्थ्य के तीन महत्वपूर्ण घटकों– शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक अवस्था पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। उपर्युक्त तीनों घटक आपस में काफी घनिष्ठता से संबंधित है।

शोध के उद्देश्य
छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या का अध्ययन।

शोध का महत्व
शोध का महत्व केवल यह हैं, कि इस जनजाति के सदस्यों में स्वास्थ्य जागरूकता तथा उनकी समस्याओं को ज्ञात करके एवं डाटा तैयार करके प्रस्तुत किया जाए। ताकि सरकार द्वारा ऐसी योजना बनायी जाये की इनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाई जा सके एवं इनके स्वास्थ्य स्तर को उच्च किया जा सके।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ की आदिवासी जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोत को प्रयोग में लाया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों में साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन एवं केंद्रीय समूह परिचर्चा प्रविधि को शोध अध्ययन में शामिल किया गया है। अनुसूची में स्वास्थ्य समस्या तथा स्वास्थ्य से संबन्धित प्रश्नों को शामिल किया गया। अवलोकन, साक्षात्कर और केंद्रीय समूह परिचर्चा द्वारा इन जनजातियों के सदस्यों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन किया गया।

विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है जिसमें स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्रश्नों को सारणी द्वारा विश्लेषित किया गया है। जो इस प्रकार हैं–

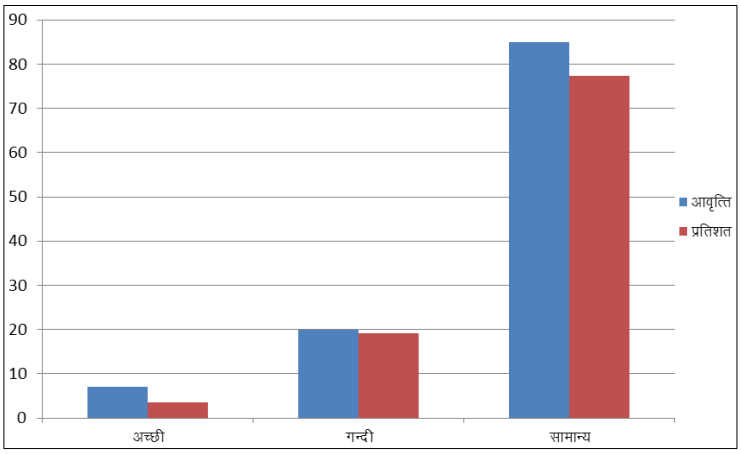

सारंणी 1.1: उत्तरदाताओं के आवास के आस–पास स्वच्छता का वर्गीकरण–

सारणी 1.1. में विश्लेषित समंको से स्पष्ट है कि अधिकांश जनजातियों के आवास के आस–पास स्वच्छता सामान्य रहती हैं जिनकी प्रतिशत 77.27 हैं आवास के आस–पास गन्दगी 19.09 प्रतिशत एवं 3.63 प्रतिशत आवास के आस–पास अच्छी स्वच्छता रहती हैं। इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के आवास के आस–पास की स्वच्छता सामान्य रहती है।

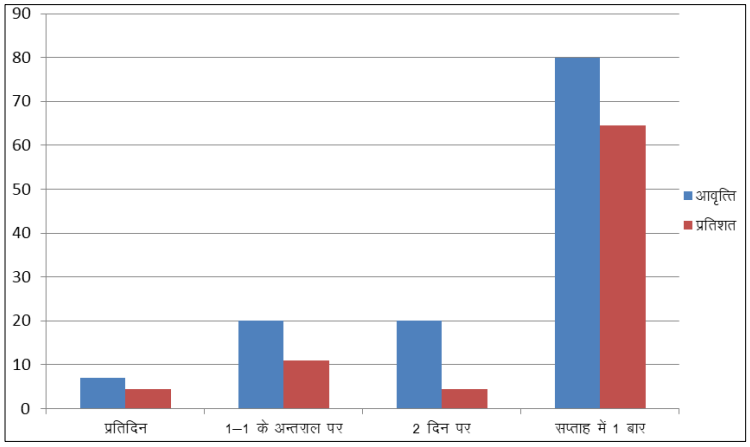

सारणी 1.2: उत्तरदाताओं के आवास की सफाई के संदर्भ में दैनिक अंतराल का विवरणः–

छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय के लोग कितने समय के अंतराल में अपने आवासों की सफाई करते है इस सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जो सूचनाएँ प्राप्त की गई है। उन्हें सारणी 1.2 में विश्लेषित किया गया है, कुल 64.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर 1–1 दिन के अंतराल में होती है, तथा 10.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर की सफाई दो दिन पर 4.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर की सफाई प्रतिदिन होती है इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के घर की सफाई सप्ताह में एक बार होती है।

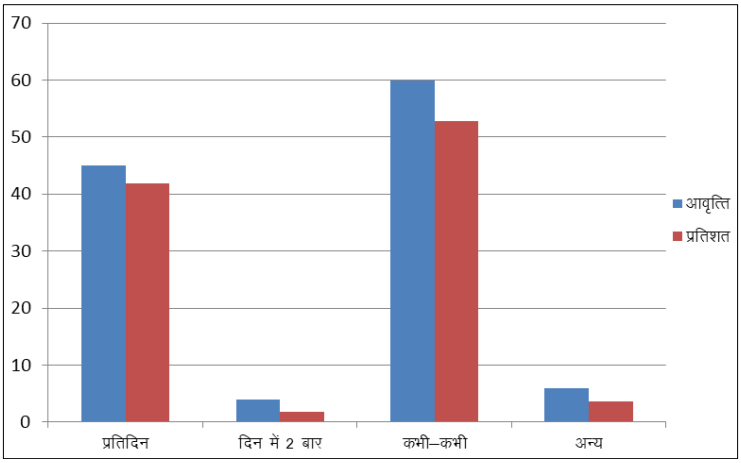

सारणी 1.3: उत्तरदाताओं के द्वारा दांतों की सफाई की प्रवृत्ति के आधार पर वर्गीकरण–

सारणी 1.3 में विश्लेषित समंको से स्पष्ट है कि 52.72 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी दाँतों की सफाई कभी–कभी करते हैं। 41.81 प्रतिशत उत्तरदाता दाँतों की सफाई करते हैं तथा 3.63 प्रतिशत उत्तरदाताओं अन्य चीजों से साफ करते हैं। मात्र 1.81 प्रतिशत उत्तरदाता दिन में दो बार साफ करते हैं इस प्रकार समंको से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता दाँतों की सफाई कभी–कभी करते हैं।

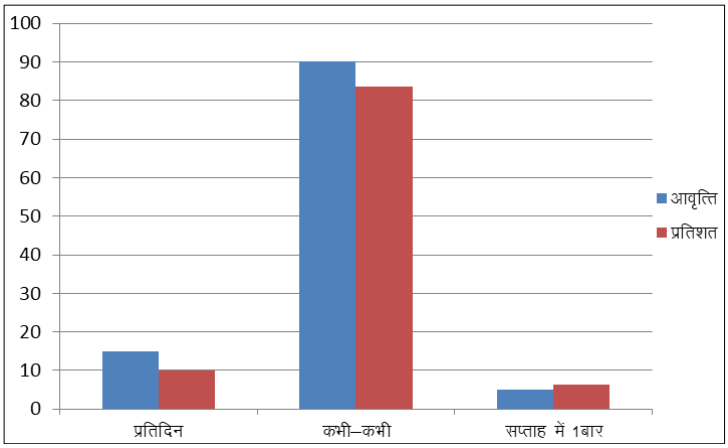

सारणी 1.4: उत्तरदाताओं के यहाँ स्नान करते की प्रवृत्ति के आधार पर वर्गीकरण–

सारणी– 1.4 के समंको से विश्लेषित होता है कि 83.63 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी स्नान करते हैं। एवं 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन स्नान करते हैं तथा मात्र 6.36 प्रतिशत उत्तरदाता सप्ताह में एक बार स्नान करते हैं। इस प्रकार प्राप्त आक़ड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता कभी–कभी स्नान करते हैं।

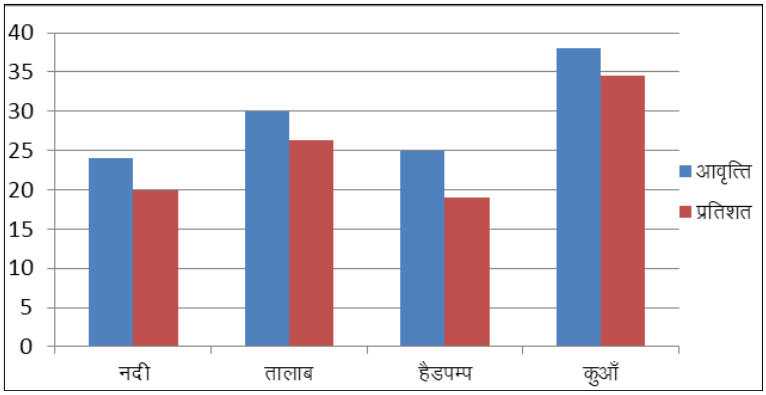

सारणी 1.5: उत्तरदाताओं के पेय जल की स्थिति के आधार पर वर्गीकरण

उपरोक्त समंको के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि 34.54 प्रतिशत उत्तरदाता पेय जल का उपयोग कुओं के पानी से करते हैं, एवं 26.36 प्रतिशत उत्तरदाता तालाब के पानी का तथा 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता पेयजल का उपयोग नदी के द्वारा 19.09 प्रतिशत हैंडपंप के द्वारा पेय जल का उपयोग करते हैं। इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाता पेय जल का उपयोग कुओं के पानी से करते हैं।

सारणी 1.6: उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी स्वास्थ्य समस्या के आधार पर वर्गीकरण–

क्र.	स्वास्थ्य समस्याएं	आवृत्ति	प्रतिशत
1	नहीं मालूम	71	64.54
2	डॉक्टर व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नहीं है।	10	9.09
3	बीमारियां मुख्य कारण है। (मलेरिया/निमोनिया/हैजा)	20	18.18
4	प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र जो है भी वह बहुत दूर है।	7	6.36
5	अन्य–डाक्टर इलाज करने नहीं आते है।	2	1.81
	कुल योग	110	100.00

सारणी 1.6 में प्रस्तुत समंको के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में 64.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें स्वास्थ्य समस्या के बारे में कोई जानकारी नहीं है। 11.81 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके गावों में डॉक्टर प प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है। तथा 9.09 प्रतिशत उत्तरदाताओं कहते है कि स्वास्थ्य समस्या में प्रमुख कारण यहाँ बीमारियों (मलेरिया/निमोनिया/हैजा) का होना है। 8.18 प्रतिशत सदस्यों का कहना था, कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जो है भी वह बहुत दूर है। 6.36 प्रतिशत का कहना था कि डॉक्टर इलाज करने नहीं आते है। अतः इस प्रकार प्राप्त आकड़ों से निष्कर्ष निकाला जाता है कि छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में अस्वस्थता व स्वास्थ्य समस्या का प्रमुख कारण इन्हें स्वास्थ्य के बारे में अधिक जानकारी का न होना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भौतिक एंव पर्यावरण संबंधी के साथ–साथ व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य की रक्षा एवं निरोग रहने के लिए अपने शारीरिक स्वच्छता पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य एवं अरोग्यता प्रत्येक व्यक्ति के अलग–अलग स्वास्थ्य सबन्धित शारीरिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। विश्लेषित उपरोक्त सारणी को आधार मानते हुए यह निष्कर्ष निकला गया है कि अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाता अपने आवास के आस–पास की स्वच्छता सामान्य (77.27 प्रतिशत) होती है। एवं 74.54 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आवास का कूड़ा कचड़ा घर के पास ही फेंकते है और अधिकांश (64.54 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के घर सप्ताह में एक बार साफ होती है। तथा घर में पीने का पानी जात है परन्तु 52.72 प्रतिशत उत्तरदाता दांतों की सफाई कभी–कभी करते है। और स्नान भी अधिकांश उत्तरदाता कभी–कभी करते है। लेकिन स्नान करने व कपड़े धोने के लिए साबुन का उपयोग करते है। पेय जल के अधिकतर कुओं के पानी का उपयोग करते है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय में 64.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हे स्वास्थ्य समस्या के बारे में कोई जानकारी नहीं है। यथास्थिति विश्लेषण के आधार पर यह सुझाव प्रस्तावित किया जा सकता है कि इस जनजाति के लिए सरकार को ऐसी नई योजना का निर्माण करना चाहिए जिससे उन्हें सम्पूर्ण स्वास्थ्य शिक्षा दी जा सकें तथा किस प्रकार से अपना रहन–सहन एवं स्वच्छता रखें इसकी भी शिक्षा दी जाये ताकि वह स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें। छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदाय के क्षेत्र में सभी जगह प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले जायें, तथा सभी प्रकार के विशेषज्ञ डॉक्टरों को रखा जाये व उसका स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय–समय पर मूल्याकंन किया जाये की वह सुचारू रूप से चल रहा है कि नहीं और उससे वहाँ की जनजातियां कितनी लाभान्वित हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल, जी, के, – पाण्डेय, एस,एस, 2007, श्सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियाँ, आगरा साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन प्रा, लि.।
2. चौबे, कैलाश, 2001, स्वास्थ्य भूगोल, भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
3. Dubos R. Man and His Environment, pan America Health organization scientific publication No 131, Washington, D.C, 1966.
4. Imboden JB, Conter AB, Cluff LE, Reor RWT. Symptomatic Recovery form medical Disorders Journal of the American Med. Ass. 1961; 178:1182-84.
5. कोली, एल., 2010. "रिसर्च मैथडोलोजी", आगरा, वाई, के, पाबिल्शर्स।
6. Lieban RW. Medical Anthropology, Handbook of social and cultural Anthropology, J.J. Honingman (ed.)), rand me-navy and co., Checago, 1973, 103.
7. May JM. The Ecology of Human Disease, in J.B. Breaster (ed.). Environments of Man, Massachusetts: Addision wisely publication co, 1968, 75-80.
8. ओझा, एन.एन., 1990. "भारत की सामाजिक समस्याएँ", नई दिल्ली, क्रोनिकल बुक्स प्रा.लि.।
9. Samders L. Cultural Difference and Medical Care, New York, Ressell Sage Foundation, 1954.
10. श्रीवास्तव, महेश., 2009. "छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा की सामजिक व आर्थिक दशा", छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ आकादमी।
11. Tribal Health Buletin. W.H.O., Collaborating Centre for Health of Indigenous Populastion, Jabalpur, ICMR, 2014, 20.
12. वैष्णव, एम, एस, "छत्तीसगढ़ की आदिम जनजातियाँ", रायपुर, आदिमजाति अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, छत्तीसढ़,व,न,4।
13. यादव, एम.एस., "आदिवासी समुदाय में स्वाथ्य के कुछ पक्ष", जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स।